आभार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के पूर्णता के अवसर पर सभी विद्वान गुरुजनों, मित्रों एवं सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ, जिनका मार्गदर्शन, आशीर्वाद एवं सहयोग प्राप्त हुआ है ।

सर्वप्रथम मैं अपने परम आदरणीय शोध-निर्देशक डॉ॰ कनुभाई विछियाभाई निनामा, प्रोफेसर एवं प्राचार्य, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय वडोदरा, गुजरात का ऋणी हूँ, जिन्होंने शोधकार्य हेतु विषय चयन से लेकर अपने विद्वत्तापूर्ण निर्देशन की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। वस्तुतः यह स्वीकृति मुझ अल्पज्ञ हेतु विद्या प्रदायनी सरस्वती का साक्षात् अनुग्रह ही था। आपकी विद्या प्रदायनी सरस्वती स्वरूपा विद्वत्ता एवं निर्देशन के परिणामस्वरूप ही मैं यह शोध स्तरीय गहन अध्ययन पूर्ण कर सका।

मैं अपने विभागाध्यक्ष डॉ॰ कल्पना गवली के प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ, जिनके सान्निध्य में मैंने अपना शोध-प्रबन्ध पूर्ण किया।

मैं अपने विभाग के आदरणीय प्राध्यापकगण प्रो॰ दक्षा मिस्त्री, प्रो॰ दीपेंद्र सिंह जडेजा, डॉ॰ माया प्रकाश पांडेय, डॉ॰ एन॰ एस॰ परमार आदि के प्रति आभारी हूँ, जिनका स्नेह एवं सहयोग मुझे सदैव प्राप्त हुआ है।

मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ोदरा के पुस्तकालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के पुस्तकालय और राजकीय पुस्तकालय इलाहाबाद के सहकर्मियों के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने पूज्यनीय दादी स्वर्गीय मुलका देवी, माता-पिता श्रीमती शिवकली एवं श्री गजराज सिंह के प्रति नतमस्तक हूँ जिनका आशीर्वाद मेरा सम्बल रहा है। मैं आदरणीय गुरु डॉ॰ शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर एवं प्राचार्य, हिंदी विभाग, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के प्रति आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से शोध सफलता पूर्वक पूर्ण हुआ। मैं अपने श्रद्धेय मामा श्री विजय बहादुर सिंह, प्रवक्ता एवं बड़े भैया आदरणीय श्री अवधेश कुमार सिंह, (शिक्षक), के प्रति आभारी हूँ। मैं अपने आदरणीय भैया-भाभी श्री उमाशंकर सिंह, सहायक अध्यापक, एवं श्रीमती कृष्णावती सिंह के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने सदैव शोधकार्य के लिए प्रेरित किया। मैं अपनी बहन श्रीमती फूलवंती सिंह एवं जीजा जी श्री हरीनंद सिंह के प्रति उनके सहयोग हेतु हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ। मैं अपने भतीजे आदर्श सिंह एवं भतीजी भार्गवी सिंह, भांजे प्रभात सिंह एवं भांजी अंशिका सिंह के प्रति उनके सहयोग के लिए धन्यवाद एवं स्नेहाशीष ज्ञापित करता हूँ। साथ ही परिवार के सभी सदस्यों के प्रति उनके सहयोग हेतु हृदय से

आभार ज्ञापित करता हूँ।

मेरे शोधकार्य का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष मेरी जीवन संगिनी श्रीमती प्रभा सिंह का रहा है। आपके सहयोग के बिना यह महत्त्वपूर्ण कार्य पूर्ण करना सम्भव नहीं था। मेरे हर पक्ष में आपका सदा सहयोग रहा और मैं अपने शोध को पूर्णता की ओर ले गया। इस सहयोग को मैं शब्दों में नहीं पिरो सकता इसे अहसास के माध्यम से महसूस किया जा सकता है।

मैं अपने मित्रों एवं सहयोगियों सर्वश्री डॉ॰ देवेंद्र प्रताप सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, बहन डॉ॰ पूनम सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, राकेश कुमार यादव (शिक्षक), विजय प्रकाश यादव, नागेंद्र कुमार शर्मा, अनिल कुमार सिंह (UPP), रविन्द्र कुमार सिंह, सहायक अध्यापक, एवं मामा राहुल सिंह के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने शोध प्रबन्ध की पूर्णता में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया है।

मैं उन सभी साहित्यकारों और समीक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी कृतियों से मैंने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में सहायता और विचारोत्तेजना प्राप्त की हैं।

शोध-छात्र

प्रेम शंकर सिंह
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बडौदा, गुजरात